International Journal of Applied Research 2022; 8(2): 10-11

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(2): 10-11
www.allresearchjournal.com
Received: 03-12-2021
Accepted: 10-01-2022

राघवेंद्र प्रताप सिंह
हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
राघवेंद्र प्रताप सिंह
हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

शब्दकोश की अवधारणा उसका उद्‌गम, विकास, महत्व एवं उसमें शब्दार्थ व्युत्पत्ति

राघवेंद्र प्रताप सिंह

सारांश
शब्दकोश एक ऐसा संग्रह होता है जिसकी सहायता से हम किसी साहित्य को आसानी से समझ सकते हैं इस शोध आलेख में शब्दकोश की अवधारणा को समझने का प्रयास किया गया है कोष और कोष में अंतर को समझाने का प्रयास किया गया है। कोश विज्ञान और कोश कला के अंतर को समझाया गया है और सबसे महत्वपूर्ण शब्दकोश की आवश्यकता एवं महत्व के विषय में बताया गया है।

कूटशब्दः शब्दकोश, शब्दकोश की आवश्यकता, डिक्शनरी, हिंदी डिक्शनरी, हिंदी साहित्य, शब्दकोश परंपरा।

प्रस्तावनाः

शब्दकोश की अवधारणा

शब्दकोश और उसकी अवधारणा पर बात करने और विचार करने से पूर्व शब्द की वर्तनी और परिभाषा पर विचार कर लिया जाना चाहिए। यह शब्द मूलरूप से संस्कृत भाषा से लिया गया है। संस्कृत के दो भेद हैं– वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत। वैदिक संस्कृत का प्राचीनतम ग्रन्थ है ऋग्वेद। उसमें कोश शब्द का प्रयोग तो हुआ है, पर वहाँ इसका अर्थ 'कोश' से बिलकुल पृथक है। लौकिक संस्कृत में 'कोष' और 'कोश' दोनों शब्दों का प्रयोग मिलता है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'कोश' में 'कुश' धातु है जिसका अर्थ मिलना, जबकि 'कोष' धातु है जिसका अर्थ है खींचना/निकालना। प्रयोग की दृष्टि से देखें तो संस्कृत साहित्य में दोनों का अन्यान्य अर्थों में, पर्यायवाची के रूप प्रयोग होता रहा है; जैसे, म्यान भण्डार, शब्द भण्डार, शरीर, पुस्तकालय, मधुपात्र इत्यादि। आधुनिक विद्वान अँगरेजी के शब्द 'डिक्शनरी' के लिए 'कोश' का, और 'ट्रेजर' (खजाने) के लिए 'कोष' का प्रयोग करते हैं। 'कोश के लिए कोश विज्ञान और कोश कला दो शब्द प्रचलित हैं, विज्ञान द्योतक हैं'[1]– सिद्धान्त का और कला द्योतक है प्रयोग का'। 'कोश' की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि यह शब्दों का ऐसा संग्रह है जिसमें संग्रहीत शब्दों के सम्बन्ध में जानने योग्य कुछ बातें एकत्र की गई हों अर्थात् जिस संग्रह में शब्द के अर्थ, पर्याय, व्याख्या, उदाहरण आदि हों।[2]

हिंदी भाषा में 'कोश' शब्द संस्कृत भाषा से ही लिया गया है। संस्कृत भाषा में कोश शब्द दो प्रकार से लिखा जाता है– तालव्य 'श' (कोश) और मूर्द्धन्य 'ष' (कोष) से।[3]

कतिपय विद्वान जिनमें डॉ. धीरेन्द्र वर्मा प्रमुख हैं, का मत है कि इन दोनों रूपों के अर्थों में भी काफी अन्तर आ गया है।[4]

हिंदी भाषा के शब्द–कोशों में 'कोश' के मुख्यतः निम्नलिखित अर्थ दिये गये है – कोश– (पु.सं. 1) अंड : अंडा, 2) अंड–कोश, 3) डिब्बा : गोलक, 4) फूल की कली।5) आवरण : गिलाफ।6) वेदान्त के अनुसार अन्नमय पाँच सम्पुट जो मनुष्यों के शरीर के अन्दर होते हैं।7) संचित धन।8) वह ग्रंथ जिसमें किसी विशेष क्रम से बहुत से शब्द और उसके अलग–अलग अर्थ या पर्याय हों। अभिधान। (डिक्शनरी, लेक्सिकन), 9) रेशम का कोआ : कुसियारी।10) दे, कोषाणु।[5]

आंग्लभाषा में शब्द–कोश के अर्थ में 'डिक्शनरी' शब्द प्रयुक्त होता है। डिक्शनरी लैटिनभाषा के शब्द डिक्शनेरियस से बना है, जिसका अर्थ होता है– शब्दों का संग्रह। आंग्लभाषा में यह शब्द सबसे पहली बार जान गारलेंड ने अपने शब्द–कोश के लिए प्रयुक्त किया था, जिसमें उसने लैटिनभाषा के शब्दों को कंठस्थ करने के उद्देश्य से शब्दों का संग्रह किया था।[6]

हिंदी	अँगरेजी	लैटिन
शब्दकोश	डिक्शनरी	डिक्शनेरियम

कोश का उद्‌गम और विकास

यह मान्यता है, कि भारत ज्ञान– विज्ञान के हर क्षेत्र में विश्व में अग्रणी रहा है। वेद और वैदिक साहित्य के रूप में ज्ञान के आदित्य का उदय यहीं हुआ और यहीं से उसका प्रकाश पूरे वसुधा में फैला। कोश विज्ञान का विकास निश्चित रूप से भारत में ही हुआ। भाषा वैज्ञानिक डा. भोलानाथ तिवारी ने लिखा है, ''भाषा विज्ञान की अन्य शाखाओं की भाँति ही कोश निर्माण भी सबसे पहले अपने प्रारम्भिक रूप में भारतवर्ष में विकसित हुआ।''[7]

शब्दकोश को निश्चित रूप से अगर परिभाषा में बांधा जाए, या पारिभाषित किया जाए तो कहा जाए कि शब्दकोश एक बड़ी सूची या ऐसा ग्रंथ है, जिसमें शब्दों की वर्तनी, उनकी व्युत्पत्ति, व्याकरणनिर्देश, अर्थ, परिभाषा, प्रयोग और पदार्थ आदि का सन्निवेश हो। शब्दकोश एक भाषीय हो सकते हैं, द्विभाषिक हो सकते हैं या बहुभाषिक हो सकते हैं। अधिकतर शब्दकोशों में शब्दों के उच्चारण के लिये भी व्यवस्था होती है, जैसे– अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मकलिपि में, देवनागरी में या आडियो संचिका के रूप में, कुछ शब्दकोशों में चित्रों का सहारा भी लिया जाता है। अलग–अलग कार्य–क्षेत्रों के लिये अलग–अलग शब्दकोश हो सकते हैं; जैसे– विज्ञान शब्दकोश, चिकित्सा शब्दकोश, विधिक शब्दकोश, गणित का शब्दकोश आदि। अनेकानेक प्रकार के कोश हो सकते हैं, जिनका किसी विशेष संदर्भ में अथवा संबंध में निर्माण और प्रयोग होगा या हो सकता है। सभ्यता और संस्कृति के उदय से ही मानव जान गया था कि भाव के सही संप्रेषण के लिए सही अभिव्यक्ति आवश्यक और सही अभिव्यक्ति के लिए सही शब्द का चयन आवश्यक है और शब्द के चयन के लिए शब्दों के संकलन आवश्यक हैं शब्दों और भाषा के मानकीकरण की आवश्यकता समझ कर आरंभिक लिपियों के उदय से बहुत पहले ही आदमी ने शब्दों का लेखा जोखा रखना शुरू कर दिया था इसके लिए उसने कोश बनाना शुरू किया कोश में शब्दों को इकट्ठा किया जाता है और ये शब्द विभिन्न कालखण्डों, संस्कृतियों, साहित्य, समाज इत्यादि क्षेत्रों से आते हैं।

शब्दकोश की आवश्यकता एवं महत्त्व

शब्दकोशों के बारे में जानने, पढ़ने और लिखने से पहले मुझे लगता है कि उसकी आवश्यकता और महत्त्व को जरूर समझ लेना चाहिए–

शब्दकोश एक खास तरह की किताब होती है। अँगरेजी में इसे डिक्शनरी कहा जाता है। शब्दकोश में शब्दों को एक के बाद एक अकारादि क्रम से लिखा जाता है, जैसेः अंक, अंकगणित, अंकुर, अंकुश ....., या – अंग, अंगद, अंगारा .... या – आग, आगत, आगम...., या – कक्ष, कक्षा, कगार ....., खग, खगोल, खचखच.... जिस ग्रंथ में शब्दों के अर्थ, पर्याय, व्याख्यायें आदि होती है उन्हें शब्दकोश कहते हैं और जिस कोश में किसी शब्द के संबंध की विशेष ज्ञातव्य बातें विस्तार से दी जाती है या विषयवार उनका विस्तृत विवेचन होता है, उन्हें ज्ञान कोश अथवा विश्वकोश कहते हैं।[8]

शब्दकोश चाहे जिसका हो, चाहे जैसा हो, उसमें समान रूप से हर शब्द के बाद बताया जाता है कि वह शब्द संज्ञा है या सर्वनाम या क्रिया आदि। इसके बाद उस का अर्थ लिखा जाता है। बड़े कोशों में शब्द का अर्थ समझाने के लिए उसकी परिभाषा भी होती है। कई बार यह भी बताया जाता है कि वह शब्द कैसे बना यानी उसकी व्युत्पत्ति के बारे में भी जानकारी लिखी जाती है। यानी वो जो शब्द है वो हमारी अपनी भाषा का शब्द है या किसी और भाषा से आया है।

किसी भी किताब को पढ़ते समय हर एक अनजान शब्द के अर्थ को समझना बहुत जरूरी होता है। तभी किताब पढ़ने से हमें पूरा ज्ञान मिल पायेगा। मान लीजिए मां शब्द है यह तो हम अच्छी तरह जानते हैं कि मां, क्या होती है, अम्मा, मम्मी, माई, माता लिखे हैं तो भी कोई मुश्किल नहीं होती ये शब्द हम बचपन से ही जानते हैं लेकिन कहीं जननी लिखा होगा तो हम में से कुछ को उसके मायने शायद न पता हों या कुछ के लिए इसका ये अर्थ स्पष्ट न हो। तब हम 'जननी' शब्द के बारे में किसी कोश का रुख करेंगे। वहां लिखा होगा– जन्म देने वाली, मां, माता, इस प्रकार हमें जननी का अर्थ किसी कोश से पता चल सकेगा, हालाकि शब्दों के अर्थ को जानने का यही तरीका प्रचलित भी है।

बारिश के लिए कई शब्द हम बचपन से ही जान जाते हैं, जैसे– वर्षा, बरखा, बरसात, बूंदाबांदी ....

इसी प्रकार वर्षा ऋतु के अनेक शब्द हमें पता होते हैं, जैसे– चौमासा, बरसात। लेकिन पावस और वृष्टि जैसे शब्द शायद हमें नए लगें, इन का अर्थ भी बारिश या वर्षा ऋतु है– यह कोश ही बताता है। यानी जिन शब्दों का प्रचलन हमारे समाज में बोलचाल के रूप में कम होता है हम उसका अर्थ शब्द कोशों से ही जान सकते हैं।

चौमासा तो ठीक है, लेकिन चातुर्मास आ गया तो मुश्किल बढ़ जाती है। तब भी हमें कोश देखना चाहिए। पहले जब साधु संत देश भर में घूमा करते थे, तो बारिश के मौसम में कच्चे रास्ते चलने लायक नहीं रहते थे इसलिए वे लोग किसी उपयुक्त स्थान पर चार महीनों का पड़ाव करते थे। शब्दकोश हमें बताएगा कि बरसात में पड़ाव की इस प्रथा को ही चातुर्मास कहते हैं।

हर एक भाषा में प्रायः एक ही शब्द के कई मायने होते हैं तब भी संकट उत्पन्न हो जाता है। हिंदी के एक शुरुआती शब्द अंक को ही ले लीजिए इसके क्या क्या मायने हो सकते हैं ये हमें शब्दकोश से ही पता चलता है। जैसे– संख्या, गोदी, चिह्न, नाटक का एक भाग।

'Book listing and explaining the words of a language.'[9]

शब्दार्थ एवं व्युत्पत्ति

व्युत्पत्ति से तात्पर्य शब्द की उत्पत्ति की मूलभाषा से अथवा शब्द की जननी भाषा से है, व्युत्पत्ति में भाषा का नाम संक्षिप्ति में दिया जाता है। अगर शब्द अरबी और फ़ारसी दोनों का है तो व्युत्पत्ति अरबी ही दी जाती है, क्योंकि ऐसे शब्दों को फ़ारसी ने अरबी से ही लिए हैं। तत्सम और तद्भव दोनों रूपों की व्युत्पत्ति संस्कृत ही दी जाती है। यदि शब्द हिंदी के हैं तो उनकी व्युत्पत्ति नहीं दी जाती है। लेकिन यदि शब्द दो भाषाओं के योग से बने हैं, जैसे– दादागिरी = दादा (हिं.) + गिरी (फा.) तो ऐसे शब्दों को शब्दकोश में इस प्रकार दिया गया है– दादागिरी [हिं.+फा.]

शब्दकोशों में व्याकरणिक कोटि की बात करें तो इनमें भी प्रायः भिन्नता होती है अथवा ये भी कह सकते हैं कि हर दूसरे शब्दकोश में पहले के मुकाबले कुछ नयापन मिलेगा। जो शब्द अभी तक हिंदी में 'अव्यय' लिखे जाते थे, उनको कई शब्दकोशों में कई विभागों में बाँट दिया है, या कहें की अलग–अलग तरीके से विभागों की रचना की गई है जो भिन्न–भिन्न हैं। जैसे– क्रिया विशेषण, निपात, परसर्ग, पूर्वप्रत्यय, परप्रत्यय आदि।

संदर्भ

1. कोशीय प्रविष्टि : संरचना और संदर्भ – प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल कोश निर्माण प्रविधि एवं प्रयोग– पृष्ठ– 18
2. हिंदी विश्वकोश, पृ. 221
3. कोशों मूर्द्धन्यान्तः तालव्यानन्त इत्यन्ये–हलायुध कोश, पृ.250
4. कोश–कलाः प्रथम संस्करण, पृ. 2,3
5. कोश–कलाः प्रथम संस्करण, पृ. 2,3
6. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, खण्ड 7, पृ. 338
7. भोलानाथ तिवारी, कोश विज्ञान शब्दकार, दिल्ली
8. हिंदी विश्व कोश, खण्ड–3, पृष्ठ 221, नागरी, प्रचारणी सभा, काशी, 1963
9. साहनी कनाइज डिक्शनरी